कुरु म मछड़ी

अक गांव कर नांव केसमरदा राहय। ओ गांव कर आदमीन मछड़ी कर बेझा धंधा करैं। मंगलसिंह अउर बुधसिंह दुई भाई राहंय। उन रोज दिन मछड़ी पकड़ेले जांय। रोज कर खाय टकरायहेर।

अक दिन गईन तो नैको पाईन। तो मुह झुरोयके आय गईन। तो अक भाई कथै,''भाउ, कसे म आज नैको पावन नै। अखर रोज पावन गा।'' उन बेझा रिसाईन अउर अक रुख तड़ी बैठे राहंय।

उही समय केसमरदा गांव कर सियाना उही बाट ले जावत राहय। तो कथै,''तुम रोज मछड़ीच खाथो। आज मै मछड़ी खायके तुया घर ले करके खायके भग। तो फेर कहिस,'' हम रोज जान बे। मछड़ी नै मिलै तोकी, काईन खाबो।''

तो सियाना कथै,''कसे नै मिलही मछड़ी। चल जाबो, मछड़ी पकड़ेले।''

उन नन्दी पोहचिन। तो अकठे डोबरा मारिन अर ओके छिचडईन। उंहा रदा मछड़ी राहय। धरीन फेर खुस होयके घर आय गईन।

लेखक: सालिकराम